"कबीर और गाँधी" पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

कबीर और गाँधी नामक निबन्ध का सार

प्रस्तावना ⇒ सुप्रसिद्ध निबन्धकार डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल द्वारा लिखित "कबीर और गाँधी" नामक निबन्ध में गाँधी पर कबीर की विचार धारा के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

⇒ साम्यता का मुख्य स्रोत ⇒

⇒ आध्यात्मिकता जीवन का आधार ⇒
⇒ राम का अर्थ
⇒ मानवता सर्वोपरि
⇒ हरिजन सम्बन्धि विचार धारा
⇒ तप का सही अर्थ
⇒ राजनीति में आध्यात्मिकता की आवश्यकता
⇒ स्वराज्य का अर्थ
⇒ गाँधी का महत्व

निष्कर्ष — कबीर अपने आदर्शों और गाँधी अपनी कर्मशीलता और क्रियात्मकता के कारण हर युग में प्रासंगिक व्यक्तित्व हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति इन दोनों के जीवन सार का समझ सके तो मानवता का कल्याण हो जायेगा।

Scanned with CamScanner

सा मां पातु सरस्वती

– रमेशचन्द्र शाह

⇒ सामां पातु सरस्वती नामक निबन्ध का केन्द्रीय भाव

– निबन्धकार "रमेश चन्द्र शाह" द्वारा लिखित "सा मां पातु सरस्वती" नामक निबन्ध में सर्वत्र व्यंग का भाव दृष्टिगोचर होता है। लेखक ने साहित्य जगत में आई विसंगतियों को उजागर किया है यहाँ भी बाजारवाद हावी हो गया है लोग बानजाल द्वारा खुद को ऊपर उठाने और दूसरों को रसातल में गिराने की होड़ में लगे हैं। असली साहित्यकार धूल फांकते दिखाई देते हैं और नकली सम्मान पा रहे हैं। जो साहित्यकार नहीं है उन्हें जबरन साहित्यकार घोषित किये जाने के चक्रव्यूह रचे जा रहे हैं। लोग पढ़ते-2 लिखने बैठ जाते हैं और कुछ ही समय में बड़े लेखकों की अग्रिम पंक्ति में स्थान पा जाते हैं और सरस्वती उपासक देखते ही रह जाते हैं क्योंकि वह किसी प्रकार का छल प्रपंच या दाँव पेच में माहिर नहीं होते हैं।

साहित्य के क्षेत्र में अब राजनीति का दखल इतना हो गया कि लेखक को साहित्य जगत में सरस्वती की अनुपस्थिति का आभास होने लगा है वर्तमान में कविता कान से नहीं पेट से सुनाई देती है।

- 'सा मां पातु सरस्वती' निबन्ध का उद्देश्य
रमेशचन्द्र शाह द्वारा रचित निबन्ध सा मां पातु सरस्वती का उद्देश्य साहित्य जगत में आई विसंगतियों को उजागर करना है।

काव्य का स्वरूप बदल रहा है, काव्य में राजनीति की पकड़ बढ़ रही है। यहाँ अब स्वयं को या अपने मनपसंद व्यक्ति को साहित्यकार सिद्ध कराने की होड़ लगी है आधुनिकता के नाम पर साहित्य, कला, धर्म सभी की आहुति दी जा रही है सबको एक ही तराजू में तोला जा रहा है। लेखक का उद्देश्य इन पंक्तियों द्वारा समझा जा सकता है।

- "मुझे लगा कि वाग्देवी का साम्राज्य सहसा सिकुड़ गया है और वह मनोमय लोक के उस फ्रंटियर से नहीं, अन्नमय लोक से इस फ्रंटियर से ही लौटी जा रही है। जरा गौर से देखा तो पता चला अब उसके लिए मनोमय लोक का प्रवेश-द्वार ही बंद हो गया है और प्राणमय लोक में ही प्रवेश करते वह इस तरह हिचकिचा रही है मानो बिना पासपोर्ट के घुस रही हो।

के लेखक का उद्देश्य और सोच यही है कि साहित्य जगत में राजनीति का दखल न हो, बाजारवाद को बढ़ावा न मिले। लेखक चाहता है कि साहित्य में शुद्ध काव्य का सृजन हो और पाठक काव्य की रसामृत में डूब कर आनन्द से हर्षित हों। इसलिए लेखक सरस्वती देवी से प्रार्थना करते हैं कि रसहीन साहित्य से उनकी रक्षा करें।

— ० —